IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कोरोना काल में विश्वविद्यालय शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ और उनका निवारण

साधना मलिक
शोधकर्त्री (एम°एड°)
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
कुरुक्षेत्र ।

डॉ° ज्योति खजुरिया
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
शिक्षा-विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र ।

सारांश

प्रकृति नित्य परिवर्तनशील है । प्रत्येक वस्तु पर परिवर्तन का प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है । शिक्षण प्रक्रिया भी इस परिवर्तन से परे नहीं हैं । आज का युग तकनीक प्रधान युग है । अतः पारम्परिक शिक्षण विधि की तुलना में नवीन तकनीक आधारित शिक्षण विधि की आवश्यकता महसूस होने लगी है । इसलिए शोधकर्त्री द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक विभागों, संस्थाओं के शिक्षकों और कॉलेज के 100 शिक्षकों का यादृच्छिक तरीके से चयन किया गया है। इसके लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है । प्रस्तुत अध्ययन में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है जिसमें कुल 20 प्रश्न हैं जो निर्धारित शोध विषय के अन्तर्गत आने वाली सामान्य सूचना पर आधारित भी हैं । सभी प्रश्नों से सम्बन्धित उत्तरों की गणना करके प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है। शोध के परिणामों के आधार पर यह कहना उचित होगा कि ऑनलाईन शिक्षण मोड़ जो अभी अपनी शैशवस्था में है, उसे जल्द ही परिपक्वता निर्धारित पैमानों की आवश्यकता है।

कीवर्ड्स

कोरोना काल में विश्वविद्यालय शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ, निवारण व सुझाव

प्रस्तावना:

संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद भारत विश्व में सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली है, इसके राज्यों में 993 विश्वविद्यालय, 3995 कॉलेज और 10725 स्वायत्तशासी संस्थान हैं । विभिन्न संस्थानों के अंतगर्त अंडर ग्रेजुएशन संस्थान (स्नातकोत्तर), डॉक्टरेट (पीएच°डी°) और पोस्ट डॉक्टरेट कोर्स के अंतर्गत उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है।

वुहान शहर चीन में विकसित कोरोना वायरस रोग 2019 (सीओवीआईडी) को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक महामारी का दर्जा दिया है । कोविड-19 महामारी के कारण विश्वभर में विश्वविद्यालयों की सभी गतिविधियों को स्थगित कर दिया गया था जैसे कार्यशाला, सम्मेलन, खेलकूद और अन्य गतिविधियाँ। इस अत्यधिक संक्रामक रोग की वजह से सभी छात्रों और स्टाफ सदस्यों, प्रोफेसर, सहायक प्रोफेसर स्टॉफ की सुरक्षा के मद्देनजर विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और स्कूल इत्यादि को कुछ समय के लिए विराम दे दिया गया है जिससे उन्हें शारीरिक व मानसिक मुश्किलों का सामना ना करना पड़े ।

अध्ययन का औचित्य:

प्रस्तुत अध्ययन को प्रेरित करने वाले कारकों में से एक है कोविड-19 के दौरान होने वाले आकस्मिक शैक्षणिक परिवर्तन।

आर°कोटि°, मयूर (2020) ने अपने अध्ययन में पाया है कि कोविड-19 महमारी ने ऑनलाईन शिक्षा में महत्त्वपूर्ण चित्रण प्रस्तुत किया है जहां पर परम्परागत तरीके को चुनौती देकर नवीन प्रौद्योगिकी की तरफ अपना कदम बढ़ाया गया है।

कैथी मोटा (2020) ने अपने अध्ययन में पाया है कि कोरोना काल के दौरान कॉलेज प्रशासन को ऑनलाईन परीक्षा आयोजित करना, निरीक्षण करना, अवलोकन व मूल्यांकन करना जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है।

अपने इस अध्ययन में शोधकर्त्री निम्न प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करेगी।

1. क्या कोविड-19 के दौरान विश्वविद्यालय शिक्षक शैक्षणिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहे हैं?
2. क्या विश्वविद्यालय शिक्षक शैक्षणिक समस्याओं का निदान करने में पूरी तरह से सफल रहे हैं?
3. क्या शिक्षक पौराणिक, शैक्षणिक विधियों को नवीन शैक्षणिक विधियों व तकनीकों में परिवर्तित करने के प्रयास में पूरी तरह से सफल हो पाये हैं?

उपरोक्त कारणों के आधार पर शोधकर्त्री ने कोरोना काल में विश्वविद्यालय शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों के विषय का चयन किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन:

सिद्धार्थ चंद्रा (2014) का अध्ययन इतिहास में सबसे विनाशकारी महामारी पर आधारित था। 1918-19 'स्पेनिश' इन्फलुऐजा हाल के महामारी का केन्द्र बिन्दु भारत था जिसकी अनुमानित मृत्यु 10 से 20 मिलियन के बीच थी। हम स्थानिक या अस्थाई डाटा का उपयोग करके पूरे भारत में 1918 के इन्फूलएंजा के प्रसार मृत्यु पर और विकास के पैटर्न की विशेषता बताएंगे।

ललितकांत (2018) के शोध में पाया गया कि इन्फलूएंजा महामारी के परिणामों के आधार पर भारत में (10-20 मिलियन) मृत्यु की सबसे बड़ी संख्या थी और साथ ही दुनिया में सबसे अधिक मौतों का प्रतिशत (4.39 प्रतिशत) था।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. विश्वविद्यालय शिक्षकों के समक्ष आने वाली शैक्षिणक तकनीकी व प्रशासनिक चुनौतियों का अध्ययन करना।
2. विश्वविद्यालय शिक्षकों के समक्ष आने वाली चुनौतियों के निवारण व सुझावों का अध्ययन करना।

उपकरण:

प्रस्तुत अध्ययन में शोध का अध्ययन शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित, प्रश्नावली के आधार पर किया गया जिसमें कुल 20 प्रश्न शामिल थे। इसमें प्रश्नावली का प्रयोग किया गया जो शिक्षकों पर आधारित थी जो निर्धारित शोध विषय के अन्तर्गत आने वाले सामान्य सूचना पर आधारित थी। प्रत्येक प्रश्नों के प्रयोग के लिए विकल्प दिया गया था।

शोध विधि:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्ती ने इन विधियों में से सर्वेक्षण विधि को अपनाया है।

प्रतिदर्श का चयन:

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने शोध के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के सभी शैक्षणिक विभागों, संस्थाओं और कॉलेज के 100 शिक्षकों का यादृच्छिक तरीके से चयन किया।

सांख्यिकीय तकनीक:

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली का प्रयोग करके विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित जानकारी को हाँ या नहीं के उत्तर में इकट्ठा किया गया है। सभी प्रश्नों से सम्बन्धित उत्तरों की गणना करके प्रतिशत सांख्यिकीय तकनीक के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है ।

$$\text{मदों का प्रतिशत} = \frac{\text{प्राप्त मद}}{\text{कुल मद}} \times 100$$

उपरोक्त सूत्र के आधार पर शिक्षकों से निम्नलिखित आंकड़े प्राप्त कर आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है ।

शिक्षकों के अभिमत हेतु प्रश्नावली

क्र॰सं॰	प्रश्न	हाँ	नहीं
1.	क्या कोरोना काल के दौरान, अकस्मात ई-शैक्षिणक प्रक्रिया के संचालन से आपकी दिनचर्या प्रभावित हुई है?	71	28
2.	क्या ई-शैक्षिणक गतिविधियों के दौरान आप Internet का इस्तेमाल करना सहज महसूस करते थे?	78	22
3.	ई-शैक्षिणक गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों को अपने विषय से सम्बन्धित जानकारी देने में आप सहज महसूस करते थे?	70	30
4.	क्या ई-पोर्टल के लाभों के विषय में भविष्य को लेकर आप सहमत हैं?	74	26
5.	क्या लॉकडाउन के दौरान विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान देने में आप सफल हो सके हैं?	37	63
6.	क्या कोविड-19 के दौरान प्रयोगशाला व्याख्यान देने में आप सक्षम रहे हैं?	43	57
7.	क्या ई शैक्षणिक गतिविधियों में तकनीकी संसाधनों का प्रयोग आपके लिए आसान रहा था?	58	42
8.	क्या ऑनलाईन शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर आप संतुष्ट हैं?	24	76
9.	क्या उच्च शिक्षण प्रबंधन समितियों द्वारा समय-समय पर तकनीकी प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था?	57	43
10.	क्या कोरोना काल के दौरान शिक्षार्थियों का पूर्ण रूप से सहयोग आपको प्राप्त हुआ था?	56	44
11.	क्या आपको तकनीकी नेटवर्किंग जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा था?	84	16
12.	क्या आपको कोरोना काल के दौरान स्वास्थ्य संबंधी जैसी किसी समस्या का सामना करना पड़ा था?	53	47
13.	क्या महामारी के दौरान आपके मानसिक स्वास्थ्य पर कोई असर पड़ा था?	50	50
14.	क्या खराब तकनीक के कारण आपके काम की गुणवत्ता पर कोई असर पड़ा था?	72	27
15.	क्या लॉकडाउन के दौरान 'वर्क फ्रोम होम' (Work from home) में आपने ज्यादा काम का तनाव महसूस किया था?	40	60
16.	किस कार्य स्वरूप को आप महत्त्व देते है?	94	06

17. क्या कार्यस्थल पर सामाजिक दूरी (Social Distancing) को बनाने में आप सफल रहे थे?

82 18

18. क्या लॉकडाउन के दौरान आपको उच्च अधिकारियों का पूर्ण रूप से सहयोग प्राप्त हो सका था?

78 32

19. क्या कोविड-19 के दौरान आपने 'नवीन चुनौतियों व अवसरों' को खुलेपन से स्वीकारा है?

92 08

20. क्या लॉकडाउन के दौरान शैक्षणिक गतिविधियों के लिए आपके पास पर्याप्त तकनीकी संसाधन थे?

61 39

परिणाम:

1. कोविड-19 के प्रकोप ने सिखाया है कि परिवर्तन अनिवार्य है। इसने शैक्षिक संस्थानों के लिए उत्प्रेरक का कार्य किया है। इसके लिए प्रौद्योगिकी संस्थानों को बेहतर बनाने की आवश्यकता है।
2. कोरोना जैसी महामारी के अनुभवों के परिणामों के आधार पर यह पाया कि प्रयोगशालाओं व कार्यशालाओं को डिजिटलाइज करने की आवश्यकता बढ़ गई है। इसके लिए शैक्षणिक विभागों द्वारा आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिए।
3. शिक्षा-विभाग द्वारा समय-समय पर सभी सरकारी व गैर-सरकारी अध्यापकों के लिए ई-पॉर्टेल के लाभों और उससे जुड़ी जानकारी उपलब्ध करवाई जाए ।
4. प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों से यह परिणाम निकलता है कि जो नीति निर्माता हमारी शिक्षा नीति बनाते हैं वे (मिश्रित कोड) ऑनलाईन व ऑफलाईन के महत्त्व को अपने पाठ्यक्रम की आधारशिला बनायें ।
5. उच्च प्रबंधन समितियों द्वारा समय-समय पर सेमिनार, गोष्ठियाँ व वेबिनार का आयोजन करवाना चाहिए ।
6. आज की शिक्षा पद्धति बड़े परिवर्तन की मांग कर रही हैं जिसके लिए शिक्षण पद्धति व तकनीकी क्षमताओं को ओर बेहतर बनाने की आवश्यकता बढ़ गई है।

सुझाव:

1. शोधकर्त्री के विचार से उच्च कोटि के शिक्षा संस्थानों में डिजिटल तकनीकी संसाधन उपलब्ध कराए जाए ।
2. ऑनलाईन शिक्षण मोड जो अभी अपनी शैशवस्था में है, उसे जल्द ही परिपक्वता निर्धारित पैमानों की आवश्यकता है ।
3. मिश्रितकोड (ऑनलाईन व ऑफलाईन) को बढ़ावा देने के लिए नीति-निर्माताओं द्वारा नीतियाँ बनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।
4. डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए ऑनलाईन मोड पर उपलब्ध शिक्षण जैसे **MOOC, SWAYAM** और **ODL** जैसे प्रणालियों को महत्त्व देना अनिवार्य हो गया है ।
5. सरकारों को विश्वसनीय संचार उपकरण व उच्च गुणवत्ता वाले डिजिटल शैक्षणिक की उपलब्धता सुनिश्चित करवानी चाहिए ।

सन्दर्भ-सूची

अग्रवाल, जे.सी. एवं विश्वास, ए. (1968), सात भारतीय शिक्षाशास्त्री, दिल्ली आशा प्रकाशन ।

ध्वन, शिवांगी (2020), ऑनलाइन शिक्षण कोविड-19 संकट के समय में सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली, नई दिल्ली।

टोकरी, कैथी, मोय (2020), कोविड-19 महामारी के दौरान उच्च शिक्षा विभाग की चुनौती अवसर, फिलीपींस शिक्षा विभाग: फिलीपींस ।

उच्च शिक्षा पर ऑल इंडिया सर्वे (ए.आई.एस.एच.ई.) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2019

कैथी या टोक्लो (2020), कोविड-19 के दौरान उच्च शिक्षा की चुनौतियाँ और अवसर, अमेरिकन शिक्षा तकनीकी विभाग, अमेरिका ।

जेना, प्रवेश कुमार (2020), भारत में शिक्षा प्रणाली पर कोविड-19 महामारी का प्रभाव, बेंगलूरु

http://edsource-org/topic
educatingdespite-covid-19.
http://www.undp-org/context
http://www.ugc-ac-in/pdf